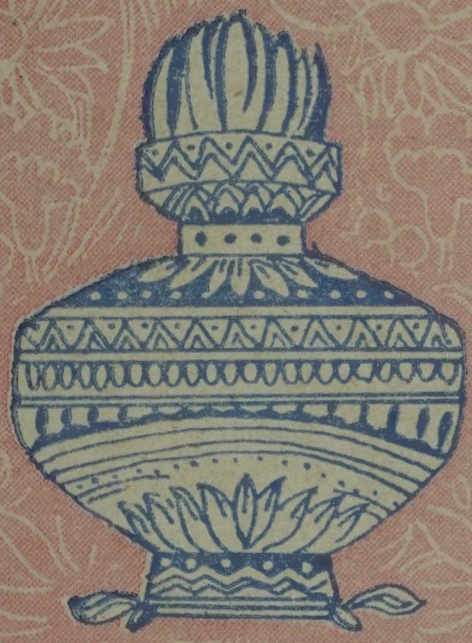

R.B.A.N.M.'s High School (Main)
LIBRARY

समाज विकासमाला

विनोबा और भूदान

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

Acc 2357/72 Acc 21667/72

समाज-विकास-माला : ५

विनोबा और भूदान

Acc No 2972 Gen-Book 18.1.77
Acc 2357/72

लेखक
सुरेश रामभाई

संपादक
यशपाल जैन

R.B.A.N.M'S. HIGH SCHOOL LIB. Acc. No. 2069 Sec. No. 1.1.963 BANGALORE
R.B.A.N.M'S H.S (M) LIBRARY B lore-42 Accession No: 4345 U.D.C No: 8-3-914-3(SUR) Date: N.S8 21-3-83

१९५८
सस्ता साहित्य मंडल-प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल
नई दिल्ली

2314
015206
N58

चौथी बार : १९५८
मूल्य
सैंतीस नये पैसे

मुद्रक
हिंदी प्रिंटिंग प्रेस,
दिल्ली

H/ 8972
18/1/77
R.B.A.M.M'S. HIGH SCHOOL LIBRARY
Accn. No.
Sec. No.
BANGALORE

समाज-विकास-माला

हमारे देश के सामने आज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों आदमियों की शिक्षा की है। इस दिशा में सरकार की ओर से यदि कुछ कोशिश हो रही है तो वही काफी नहीं है। यह बड़ा काम सबकी सहायता के बिना पार नहीं पड़ सकेगा।

बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ जबसे ध्यान गया है, ऐसी किताबों की मांग बढ़ गई है, जो बहुत ही आसान हों, जिनके विषय रोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार और बोलचाल की हो और जो मोटे टाइप में बढ़िया छपी हों।

यह पुस्तक-माला इन्हीं बातों को सामने रखकर निकाली गई है। इसमें कई पुस्तकें निकल चुकी हैं। इन सबकी भाषा बड़ी आसान है। विषयों का चुनाव बड़ी सावधानी से किया गया है। छपाई-सफाई के बारे में विशेष ध्यान रखा गया है। हर किताब में चित्र भी देने की कोशिश की है।

यदि पुस्तकों की भाषा, शैली, विषय और छपाई में उन्हें सुधार की गुंजाइश मालूम हो तो उसकी सूचना निस्संकोच देने की कृपा करें।

चौथा संस्करण

बड़े हर्ष की बात है कि इस पुस्तक का चौथा संस्करण इतनी जल्दी प्रकाशित हो रहा है। इस माला की सभी पुस्तकें पाठकों को पसंद आ रही हैं, इससे हमें बड़ा आनंद होता है। हमें विश्वास है कि इन सामयिक और उपयोगी पुस्तकों को पाठक चाव से पढ़ेंगे और इनके प्रचार में हाथ बटायेंगे।

—मंत्री

पाठकों से

इस माला की यह पांचवीं किताब है। पहली में आपने बदरीनाथ-तीर्थ की यात्रा की थी, दूसरी में जंगल की सैर की और वहां के जानवरों से परिचय किया, तीसरी में भीष्म पितामह की और चौथी में शिवि और दधीचि की कहानी पढ़ी। इस पांचवीं में एक संत की कहानी और उनके एक बहुत बड़े काम का हाल है। विनोबा का नाम आप सबने सुना होगा। उन्हींकी बातें आपको इसमें पढ़ने को मिलेंगी। देश को सही रास्ता दिखाने के लिए उन्होंने जो कदम उठाया है, उसकी भी ठीक-ठीक जानकारी आपको इस किताब से हो जायगी।

आप इसे जरूर पढ़ें। दूसरों को भी पढ़वायें।

—संपादक

R. B. A. N. M. S. HIGHER SEC SCHOOL LIBRARY
BANGALORE.
ACCN 8 .....
SEC 8 .....

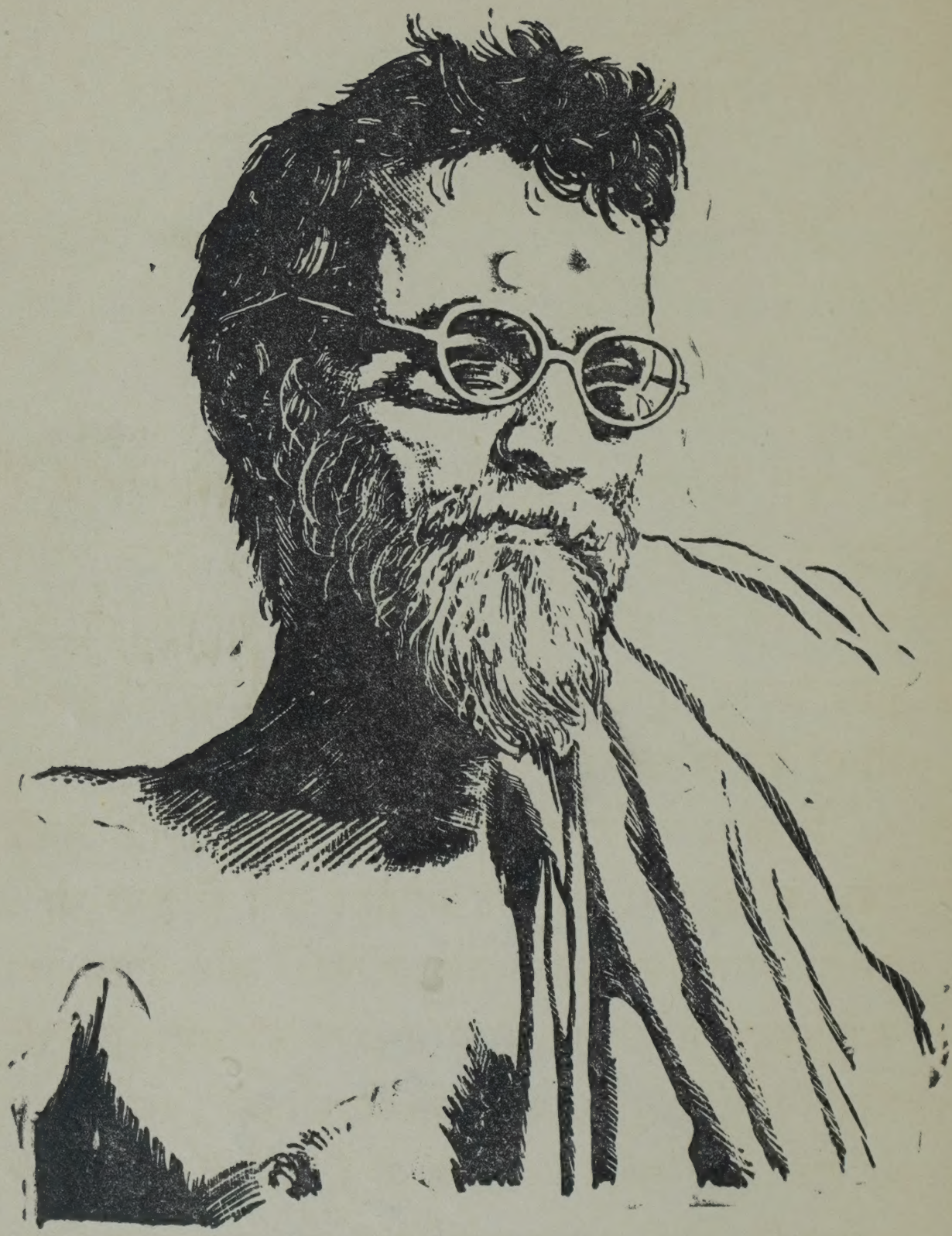

विनोबा

विनोबा और भूदान

: १ :

विनोबा कौन हैं ?

संत विनोबा कौन हैं ? उनकी उमर क्या है ? कहां के रहनेवाले हैं ? पहले क्या करते थे ? इन बातों की जानकारी के लिए लोगों का मन बहुत चाहता है, मगर जानते बहुत थोड़े ही लोग हैं । हम यहांपर उनके जीवन की खास-खास बातें बतावेंगे ।

विनोबा का जन्म ११ सितंबर १८९५ को बंबई प्रदेश के कोलाबा जिले के गागोदा गांव में हुआ था । उनकी माता का नाम रुक्मिणीदेवी और पिता का नाम नरहर भावे था। माता भगवान की बड़ी भक्त थीं और नियम से पूजा, पाठ, व्रत करती थीं । पिता बड़े ही सच्चे और नरम दिलवाले थे । विनोबा का बचपन बड़ौदा में बीता। वहां उनके पिता सरकारी नौकर थे। बारह बरस की उमर में विनोबा बड़ौदा हाई स्कूल में भर्ती हुए ।

स्कूल में वह बहुत पढ़ते थे। पुस्तकालय से किताबें लाकर घर पर रात-दिन पढ़ते रहते थे। उन दिनों उन्हें दो काम बहुत पसंद थे : दस-दस, बारह-बारह मील पैदल घूमना और नई-नई किताबें पढ़ना। सन् १९१३ में विनोबा ने मैट्रिक पास किया और दो बरस बाद एफ. ए. कर लिया। फिर बी. ए. की पढ़ाई शुरू की। लेकिन अंदर-ही-अंदर उन्हें लगता कि यह पढ़ाई किस काम की? यह आदमी को आदमी न बनाकर दफ्तर का बाबू बना देती है। इसलिए एक दिन शाम को जब मां रोटी बना रही थी, विनोबा चूल्हे के पास जा बैठे। हाथ में गोल-गोल कागज़ लिपटा था। उन्होंने धीरे-से उसे आग से छुआ दिया। कागज़ जलने लगा। मां बोली, "विन्या, यह क्या कर रहा है?" उन्होंने जवाब दिया, "मां, मैंने तय कर लिया है कि कालिज में अब नहीं पढ़ूंगा। सार्टीफिकेट जला रहा हूं।" मां ने कहा, "अरे, यह क्या? कालिज में न पढ़े, न सही। लेकिन सार्टीफिकेटों ने तेरा क्या बिगाड़ा है? रखे रहने दिये होते, कौन जाने किस समय क्या काम आ जावें?" विनोबा बोले, "नहीं मां, जब यह फैसला कर लिया कि इनसे काम नहीं लेना तो इन्हें रखकर ही क्या होगा?" विनोबा का यह अटल फैसला था।

Acci No .....
Sec No .....

कालिज छोड़कर वह महात्मा गांधी के पास आये। उनका एक आश्रम था। यह आश्रम कोचरब में था। बाद में जब गांधीजी ने साबरमती में आश्रम खोला तो वहां चले आये। आने के कुछ दिन बाद विनोबा ने काशी जाकर संस्कृत पढ़ने के लिए गांधीजी से एक साल की छुट्टी ली। छुट्टी लेकर वह गये और १९१८ में, ठीक एक साल बाद, आश्रम लौट आये। फिर तीन बरस पीछे वर्धा के सेठ जमनालाल बजाज एक दिन साबरमती-आश्रम आये। सेठजी बड़े दानी और गांधीजी के सच्चे चेले थे। उन्होंने गांधीजी से कहा कि वर्धा में रचनात्मक काम करना है। आप अपने सबसे अनमोल रत्न विनोबा को वहां के लिए दे दीजिये। गांधीजी राजी हो गये। विनोबा भी राजी हो गये। तब विनोबा वर्धा चले आये। वर्धा या उसके आसपास रहकर उन्होंने पूरे तीस बरस कठोर तपस्या की।

कई साल तक विनोबा महिला-आश्रम का काम संभालते रहे। फिर वर्धा के पास नालवाड़ी गांव में चले गये। इस गांव में उन्होंने कताई-बुनाई का खूब अभ्यास किया। गांधीजी कहा करते थे कि सूत के कातने-बुनने में विनोबा इतने होशियार हैं कि बहुत ही कम लोग उनकी बराबरी कर सकते हैं। नालवाड़ी में

विनोबा बीमार पड़ गये। अच्छे होने पर वह नालवाड़ी के पास ही पौनार नामक गांव में चले गये। वहां पौनार नदी बहती है। नदी के पास सेठ जमनालाल की एक कुटिया है। उसी कुटिया में उन्होंने अपना स्थान बना लिया।

वर्धा में ही रहकर विनोबा ने गांधीजी के सत्याग्रह-आंदोलन में भाग लिया। १९२३ में विनोबा ने नागपुर-झंडा-सत्याग्रह में जोरदार काम किया और जेल गये। एक साल बाद गांधीजी ने विनोबा को दूर दक्षिण केरल में गुरुवायूर भेज दिया। वहां एक बड़ा भारी मंदिर है; लेकिन उसमें हरिजन नहीं जा सकते थे। गांधीजी हमेशा इसके खिलाफ थे। केरल और मद्रास की तरफ यह भेद-भाव बहुत था। गांधीजी ने सत्याग्रह कराया और विनोबा केरल पहुंचे। उसमें उन्हें सफलता मिली और आज दक्षिण का हर मंदिर हरिजनों के लिए खुला है। सन् १९३० में विनोबा ने नमक-सत्याग्रह में भाग लिया और गिरफ्तार किये गये। इसी तरह सन् १९३१ और १९३२ में भी।

लेकिन देश के सामने विनोबा का नाम १९४० में आया। उन दिनों अंग्रेजों और जर्मनों की लड़ाई चल रही थी। अंग्रेजों का हमारे देश में राज था। उन्होंने

यहां से भी आदमी और सामान बाहर भेजना शुरू कर दिया। न किसीसे पूछा, न सलाह ली। गांधीजी ने इसके खिलाफ सत्याग्रह छेड़ा और विनोबा को पहला सत्याग्रही चुना। विनोबा ने सबके सामने खुले आम कहा, "इस लड़ाई में अंग्रेजों की मदद करना हराम है।" विनोबा जेल भेज दिये गये। गांधीजी ने दूसरा सत्याग्रही पंडित जवाहरलाल नेहरू को चुना, जो आजकल हमारे प्रधान मंत्री हैं। नेहरूजी सत्याग्रह करने के पहले ही पकड़ लिये गये। फिर तो यह आंदोलन देशभर में फैल गया। इस सत्याग्रह में विनोबा तीन बार जेल गये। १९४१ में जेल से छूटे।

फिर आया १९४२ का अगस्त-आंदोलन। विनोबा ९ अगस्त को ही गिरफ्तार कर लिये गये। फिर तीन साल बाद १९४५ में छूटे और पौनार के अपने परंधाम आश्रम में चले गये। इस बार दूसरे कामों के साथ-साथ उन्होंने भंगी का काम भी किया। रोज सुबह पांच बजे पौनार से चार मील दूर सुरगांव नाम के गांव में जाते। वहां के पाखाने-पेशाब, नाली साफ करते और आठ बजे लौट आते। जाड़ा हो, गर्मी हो, बरसात हो, विनोबा का काम रोज चलता रहा।

लेकिन १९४८ की ३० जनवरी को महात्मा गांधी

हमारे बीच से उठ गये तो सारे लोगों की निगाह विनोबा पर गई, क्योंकि गांधीजी के साथियों में सबसे ज्यादा पहुंचे हुए वही थे। देशभर के बड़े-बड़े नेता और रचनात्मक काम करनेवाले लोग सेवाग्राम में जमा हुए। विनोबा के कहने पर 'सर्वोदय समाज' नाम की एक बिरादरी या भाईचारा खोला गया। इस समाज का सदस्य हरकोई बालिग मर्द-औरत बन सकता है, चाहे वह कोई भी काम-धंधा करता हो, चाहे इस देश का रहनेवाला हो, चाहे परदेश का। हां वह, सत्य और अहिंसा, यानी सचाई और प्रेम के रास्ते में विश्वास करता हो। समाज कायम हो जाने के बाद विनोबा ने सारे देश की यात्रा की। इसे 'शांति-यात्रा' कहते हैं। वह यह देखने निकले कि देश की हालत क्या है, कैसी है। वह दिल्ली पहुंचे और शरणार्थियों तथा मेवों की सेवा में लग गये। बाद में वह फिर पौनार लौट गये और किसानी करने लगे। अपने हाथ से आठ-आठ, दस-दस घंटे कुदाली चलाते, हल जोतते। उनका कहना था कि "मैं हाथ-पैर की मेहनत से कमाई हुई चीज ही खाऊंगा, पैसे से मोल ली हुई नहीं।" खेती का काम जोरों से चला। विनोबा के साथ पंद्रह-बीस भाई-बहन भी काम करते थे। ये भाई-बहन देश के दूर-दूर के स्थानों के थे।

इनमें काफी पढ़े-लिखे लोग भी थे। सन् १९५१ के मार्च के महीने में, होली से जरा पहले, विनोबा हैदराबाद के लिए पैदल निकल पड़े।

यहां से उनके जीवन का नया मोड़ शुरू हुआ।

: २ :

भूदान-यज्ञ

हमने ऊपर 'सर्वोदय समाज' नाम की बिरादरी की चर्चा की है। इसका हर साल जलसा होता है। इस मौके पर गांधीजी के उसूल पर अमल करनेवाले बहुत से भाई-बहन जमा होते हैं। १९५१ में यह मेला आंध्र प्रदेश की राजधानी हैदराबाद नगर से चार मील दूर शिवरामपल्ली गांव में हुआ। विनोबा उस समय अपने खेती के काम में लगे हुए थे। लोगों ने उनसे आग्रह किया कि सर्वोदय के जलसे में जरूर हिस्सा लें। विनोबा राजी हो गये; पर एक शर्त पर। वह यह कि पैदल चलकर पहुंचेंगे। ८ मार्च को वह अपने आश्रम से पैदल निकल पड़े। हैदराबाद वहां से लगभग तीनसौ मील दूर है। जलसा ८ अप्रैल को था। विनोबा ने कहा कि दस-दस, बारह-बारह मील रोज चलकर एक महीने में पहुंच जायंगे। विनोबा के साथ सात

जने हो लिये। जरूरी सामान ले जाने के लिए साथ में बैलगाड़ी भी चली।

गांव-गांव में घूमते हुए विनोबा हैदराबाद पहुंचे और ७ अप्रैल को शिवरामपल्ली। वहांपर सैकड़ों भाई-बहन देश के कोने-कोने से जमा हुए थे। उनसे विनोबा ने कहा—अंदर से दिल को साफ रखो, बाहर से अपने को व अड़ोस-पड़ोस को साफ रखो, हाथ-पैरों पर जोर डालकर मेहनत करो, प्रेम से मिलकर रहो और जो कुछ करो, भगवान के नाम पर करो।

शिवरामपल्ली में विनोबा से कहा गया कि वह तैलंगाना की भी हालत देख लें, जहां कम्युनिस्टों ने हिंसक कार्यवाहियों से बुरा हाल कर रखा था। १५ अप्रैल को विनोबा शिवरामपल्ली से रवाना हुए। तैलंगाना आंध्र प्रदेश का एक हिस्सा है। यहां तेलगू भाषा बोली जाती है। यहां के ज्यादातर लोग किसान हैं, जिनकी हालत बहुत ही खराब है।

इस यात्रा का चौथा पड़ाव पोचमपल्ली नाम के गांव में था। यह एक छोटा-सा कस्बा है, जिसमें सात-सौ घर हैं, आबादी करीब तीन हजार। विनोबा सवेरे साढ़े सात बजे वहां पहुंच गये। थोड़ी देर बाद वह गांव में घूमने निकले। उनकी भेंट हरिजनों से हुई। वह बहुत

दुखी थे। उन्होंने कहा—हमें खेती के लिए जमीन चाहिए। जमीन हो तो हम अपने हाथ से काम करेंगे। विनोबा ने पूछा कि कितनी जमीन से काम चल जायगा? सोच-विचारकर उन्होंने जवाब दिया कि अस्सी एकड़ हो तो ठीक रहेगा। विनोबा ने कहा कि कोशिश करेंगे।

तेलंगाना की पैदल-यात्रा

दोपहर बाद कुछ लोग इकट्ठे हुए तो विनोबा ने उनसे जमीन की बात कही। भीड़ में से एक आदमी ने कहा, "महाराजजी, मेरे स्वर्गीय पिताजी की इच्छा थी कि

इन लोगों को कुछ जमीन दें। इसलिए मैं अपनी और अपने भाइयों की तरफ से सौ एकड़ जमीन इनके वास्ते आपको भेंट करता हूं।"

विनोबा ने प्रेम के साथ वह भेंट मंजूर कर ली। यह प्रेम की विजय थी। भूदान-यज्ञ का प्रारंभ यहीं से और इसी घटना से हुआ।

यह १८ अप्रैल १९५१ की बात है। फिर तो जैसे-जैसे विनोबा आगे बढ़ते गये, उन्हें और जमीन मिलती गई। किसको कल्पना थी कि कोई अपनी जमीन भी दान में देगा। लेकिन कौन ऐसा है कि जिसके पास दिल हो और दूसरों की खातिर पसीजे नहीं? फिर जब एक संत गरीबों की तरफ से मांग करे तो कौन उसे इन्कार कर सकता था? जो भगवान अमीर का है, वही गरीब का भी है। वह सबकी सुनता है।

विनोबा ने लोगों से कहा कि आज देश आजाद है, पर दुखी है। ऐसे आड़े समय में हमारे पुरखा लोग यज्ञ किया करते थे। आइये, हम-आप भी यज्ञ करें। लेकिन यज्ञ में क्या चीज चढ़ायंगे? यह वह वक्त है, जब अपनी प्यारी-से-प्यारी चीज चढ़ानी चाहिए और एक साथ मिलकर मुसीबत का सामना करना चाहिए। वह चीज क्या हो सकती है?—जमीन, जिसपर मेहनत करने से

करोड़ों का पेट भरता है। इसलिए विनोबा ने जमीन की मांग की। उनकी अपील का असर हुआ। चालीस दिन की यात्रा में उन्हें १२ हजार एकड़ जमीन मिली।

जून के महीने में विनोबा अपने आश्रम लौट आये। बारिश के तीन महीने वहींपर रहे और ११ सितंबर को फिर पैदल निकल पड़े। इस बार उत्तर में दिल्ली की तरफ। विनोबा गांव-गांव यही कहते जाते, "बाबा, आपके पांच लड़के हैं तो छठा मुझे समझिये और मेरा हिस्सा मेरे हवाले कीजिये।" दिल्ली पहुंचते-पहुंचते उन्होंने पांच करोड़ एकड़ भूमि की मांग देश के आगे रखी। उन्होंने कहा कि पांच साल के अंदर मैं इतनी जमीन चाहता हूं, ताकि पांच बरस के बाद देश में कोई भी बेजमीन न रहे।

दिल्ली के रास्ते में विनोबा को मध्यप्रदेश, विंध्य-प्रदेश, मध्य भारत, राजस्थान और उत्तर प्रदेश के गांव पड़े। उन्हें इस यात्रा में उन्नीस हजार एकड़ से ज्यादा भूमि मिली।

१३ नवंबर १९५१ को विनोबा दिल्ली पहुंचे। महात्मा गांधी की समाधि के पास राजघाट में एक कुटिया में ठहरे। ग्यारह दिन वहां रहे। पंडित जवाहरलाल नेहरू व सरकार के दूसरे ओहदेदार उनसे

मिले। २४ नवंबर को वह दिल्ली से उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले में घुसे और पहले की तरह से यात्रा जारी हो गई। नवंबर के आखिर में एक दिन सुबह के अंधेरे में कोई रास्ते चलता साईकिल-सवार विनोबा से टकरा गया। इससे उनके बहुत चोट आ गई। पर विनोबा ने अपना रोज का सफर जारी रखा। अपने काम में कोई फरक नहीं आने दिया।

चोट आ गई, पर यात्रा नहीं रुकी

अप्रैल १९५२ में जब विनोबा उत्तर प्रदेश के बनारस जिले में पहुंचे तो बनारस से चौदह मील के फासले पर सेवापुरी में सर्वोदय समाज का जलसा हुआ। इसमें यह

तय किया गया कि दो साल के अंदर पहली किस्त के तौर पर देशभर में कम-से-कम पच्चीस लाख एकड़ जमीन भूमि-हीनों के वास्ते जमा की जाय। इसके बाद भू-दान-यज्ञ के काम ने और जोर पकड़ा।

सन् १९५२ की बरसात के दो महीने जुलाई और अगस्त विनोबा ने बनारस में काशी विद्यापीठ में बिताये। ११ सितंबर को उन्होंने प्रण किया कि जबतक पांच करोड़ एकड़ जमीन नहीं मिल जाती, मैं अपने पवनार-आश्रम वापस नहीं जाऊंगा और गांव-गांव घूमता रहूंगा। १२ सितंबर को वह बिहार के लिए निकले।

बिहार में घुसते ही विनोबा ने महसूस किया कि यह तो राजा जनक का बिहार है। भगवान बुद्ध भी यहींपर हुए थे। महात्मा गांधी ने भी अपना पहला सत्याग्रह यहीं किया था। इसलिए उन्होंने अपना पूरा जोर वहांपर लगाया। बीच में दिसंबर के महीने में उनकी तबीयत बहुत खराब हो गई थी। पर भगवान ने दया की और वह ठीक हो गये। बीमारी की हालत में वह बिहार के मानभूम जिले के चांडिल नामक मुकाम पर रहे। बीमारी के बाद उन्होंने कमजोरी के कारण कुछ दिन वहां और बिताये। इसलिए चांडिल में ही ७-८-९ मार्च को सर्वोदय समाज का सालाना

जलसा हुआ। इसके बाद विनोबा फिर निकल पड़े। एक वर्ष फिर घूमे और सर्वोदय-समाज का सलाना जलसा बोध गया में हुआ। तबसे अबतक पुरी, कांचीपुरम, कालड़ी तथा पंढरपुर में समाज के सालाना जलसे हो चुके हैं और उनमें से हरएक में भूदान के काम को बढ़ावा मिला है। आजकल उनकी यात्रा राजस्थान में चल रही है।

: ३ :

कुछ अनोखी घटनाएं

विनोबा दिल्ली आ रहे थे। झांसी जिले के बड़गांव नामक गांव में उनका पड़ाव था। दिनभर गुजर गया। रत्तीभर भी जमीन दान में नहीं मिली। विनोबा के साथी बड़े परेशान थे, पर भगवान का नाम लेकर रोज की तरह साढ़े आठ बजे विनोबा सो गये। कोई घंटेभर बाद लठिया टेकता हुआ एक पासी उनके मुकाम पर आया। दो भाई जाग रहे थे। उन्होंने पूछा, "क्या है?" उसने दर्दभरी आवाज में कहा, "हमारे गांव में इतना बड़ा संत आया है। गरीबों की खातिर जमीन मांग रहा है। वह हमारे गांव से खाली हाथ लौट जावे!

गांव को पाप लगेगा। मैं अपनी ४३ एकड़ जमीन सब-की-सब दान में देता हूं।" दोनों भाइयों के आंसू भर आये। दान-पत्र भरकर वह किसान लौट गया।

मार्च (सन् १९५२) का महीना था। होली के त्योहार का दिन। विनोबा गोरखपुर जिले में घूम रहे थे। रास्ते में एक गांव पड़ा। विनोबा वहांपर कुछ मिनट के लिए ठहर गये। टोली के एक साथी की बुढ़िया मां अपने घर से निकली और उसने विनोबा के पैर छुये। कुछ कहना चाहती थी, मगर कहते नहीं बनता था। आखिर उसने हिम्मत बांधी और बोली, "महाराज, मेरे घर में पांच प्राणी हैं और मेरे पास जमीन बारह बीघे है। आप छठे हो। दो बीघा जमीन देना चाहती हूं। दो बीघा होती ही कितनी है! पर लेंगे तो बड़ा अहसान होगा।" विनोबा गद्गद् हो गये। दान-पत्र लेकर कहा, "माता, तेरी यह भेंट दो लाख बीघे से भी ज्यादा अनमोल है।"

विनोबा बुंदेलखंड में घूम रहे थे। जालौन जिले में यात्रा पूरी करने के बाद बेतवा नदी को पार करके वह हमीरपुर जिले में आये। पहला गांव मंगरौठ था; लेकिन वह पड़ाव नहीं था। गांव के पास से होते हुए विनोबा निकल गये और इटालिया में ठहरे। मंगरौठ

बड़ा नामी गांव है। वहां के रहनेवालों को दुःख हुआ कि विनोबा हमारे यहां क्यों नहीं आये। उनमें से एक

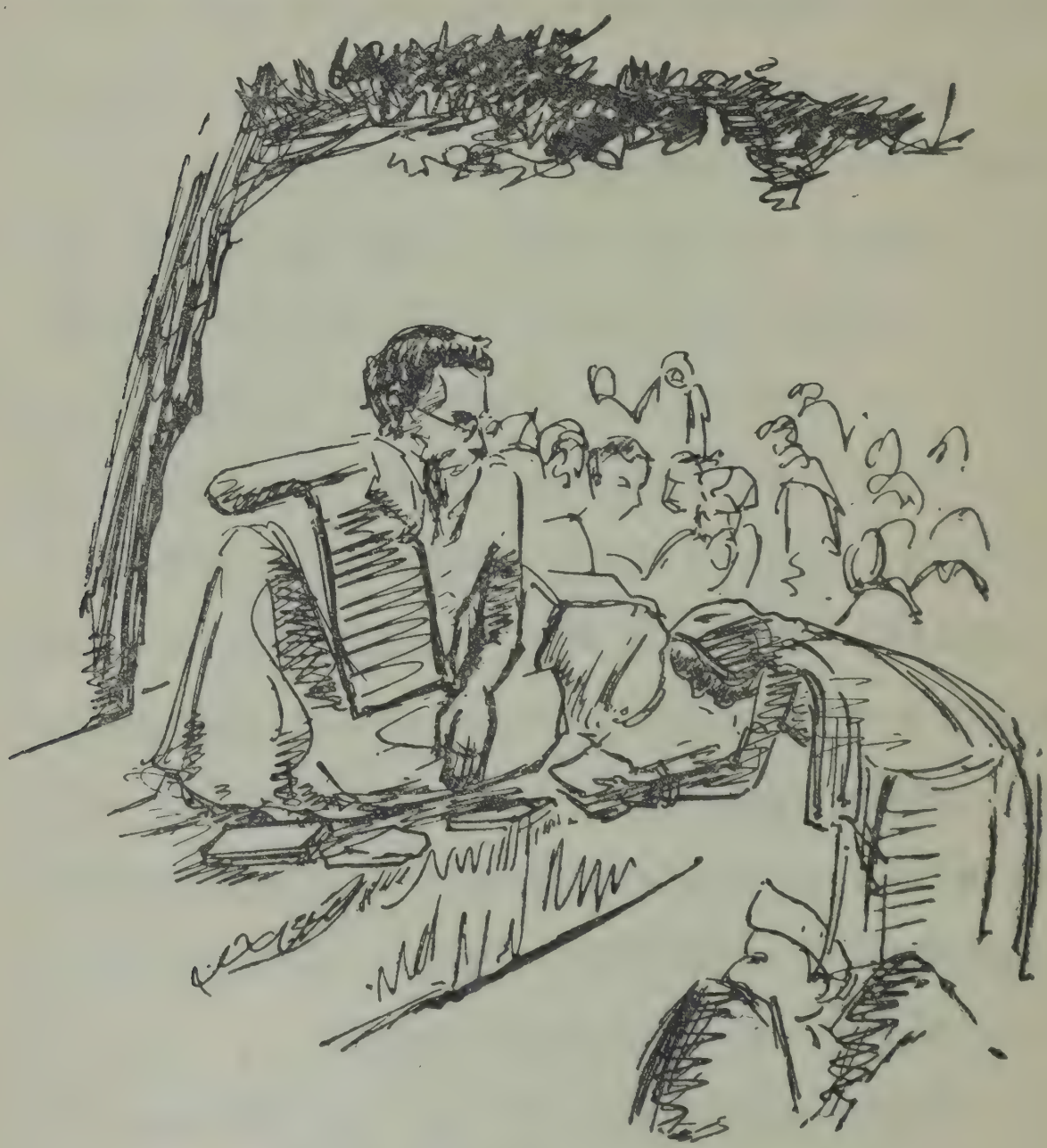

"माता, तेरी यह भेंट दो लाख बीघे से भी ज्यादा अनमोल है।"

ने पूछा, "संतजी को बुलाया जावे तो आ जायंगे ?" दूसरे ने कहा, "आ क्यों नहीं जायंगे, लेकिन यों बुलाने-चलाने में क्या रखा है ?" पहला बोला,

"तो क्या दिया जाय ?" दूसरे ने जवाब दिया, "अगर हमारा गांव वह करे जो किसीने नहीं किया तब तो कुछ बात भी है।" सब जने सोचने लगे। किसीने सुझाया कि इस गांव में १०६ घर हैं, जिनमें ६६ के पास जमीन है। सब-के-सब अपनी कुल-की-कुल जमीन संतजी को क्यों न दान में भेंट कर दें ? संतजी कहते भी हैं कि "सबै भूमि गोपाल की !" बात गांववालों के दिल को लग गई। फिर क्या था, गांव-का-गांव २५ मई को राठ नाम के स्थान पर विनोबा को भेंट कर दिया गया।

इतिहास में जो न सुना था, न देखा था वह चमत्कार हो गया। मंगरौठ का नाम सारी दुनिया में हो गया। विनोबा अपनी यात्रा में हर जगह मंगरौठ का नाम लेकर कहने लगे, "मंगरौठ में किन्नर बसते हैं या देवता ? या वहां के लोग दूसरी जात के हैं ? हर गांव को मंगरौठ बन जाना चाहिए।"

विनोबा बिहार के हजारीबाग जिले में घूम रहे थे। एक बड़े राजासाहब से उनकी भेंट हुई। विनोबा ने पूछा कि आपने अबतक कितनी जमीन दान में दी ? राजासाहब ने जवाब दिया, "जितनी जिसने मांगी, उतनी दे दी। एक भाई को ढाई हजार एकड़, दूसरे को ग्यारह हजार एकड़।" विनोबा ने फिर पूछा

P.B.A. INSTITUTE LIBRARY
Bloc-4
U.D.C. No: 4346
Date: 21-3-83

कि अब आप हमें कितनी देंगे ? राजा बोले, "आप भी जितनी मांगें उतनी।" इसपर विनोबा ने कहा, आपके पास कुल कितनी जमीन है ?" राजा ने उत्तर दिया, "परती जमीन एक लाख एकड़ है और खुदकाश्त की जमीन करीब नौ-दस हजार एकड़ है ?" यह सुनकर विनोबा बोले, "आप अपनी परती जमीन सारी और खुदकाश्त में से छठा हिस्सा दे दीजिये।" राजा ने सहर्ष स्वीकार किया।

इस तरह विनोबा को एक लाख और कई हजार एकड़ भूमि का दान मिला। इसके बाद दूसरे राजाओं ने भी एक लाख से ऊपर के दान दिये। एक राजा के घर से लगभग दो लाख से भी ज्यादा एकड़ जमीन मिली। भूमि देकर राजा ने पूछा, "महाराज, अब क्या आज्ञा है ?" विनोबा ने कहा, "जैसे हमने आपसे जमीन मांगी, आप दूसरों से मांगिये।" राजा ने यह बात मान ली और जमीन मांगने निकल पड़े। बिहार के कई जिलों—हजारीबाग, रांची, पलामू, गया—में कई बड़े-बड़े राजाओं ने भूदान-यज्ञ का काम किया।

रांची जिले के नागफेनी गांव में विनोबा का पड़ाव था। मंदिर में ठहरे थे। शाम का समय था। प्रार्थना हो चुकने पर विनोबा मंदिर के आगे टहल रहे थे।

इतने में एक गरीब किसान हाथ जोड़कर सामने आ खड़ा हुआ और बोला, "बाबा, अपनी तीन एकड़ जमीन में से मैं चालीस डिसमल दे चुका हूं। अब मैं उसको जोत नहीं सकता, क्योंकि दान की चीज में से एक दाना भी लेना पाप है।" विनोबा ने समझाया कि जबतक यह दूसरों को न दे दी जाय, तुम ही जोतो-बोओ। लेकिन वह किसान अपनी बात पर डटा रहा। तब विनोबा ने प्रेम के साथ उसके कंधे पर हाथ रखकर कहा, "जबतक यह जमीन बंट न जाय, मैंने तुम्हें दी।" किसान गद्गद् होकर चला गया।

ऐसी बीसियों घटनाएं विनोबा की इस महान यात्रा में हुई हैं। इनसे पता चलता है कि क्या गरीब और क्या अमीर, हर किसीके दिल पर विनोबा और उनके इस भूदान-यज्ञ के काम का गहरा असर हुआ है।

: ४ :

दूसरे दान

बे-जमीनवाले गरीबों के नाम पर, दरिद्रनारायण के नाम पर, विनोबा और उनके साथियों को जून १९५८ तक करीब पैंतालीस लाख एकड़ जमीन मिल चुकी है और चार हजार पूरे गांव मिले हैं। अब तो हालत ऐसी है कि वह जहां कहीं जाते हैं, उन्हें गांव-के-गांव

दे दिये जाते हैं। मिली हुई जमीन में से कोई पौने चार लाख एकड़ जमीन बांटी जा चुकी है।

सवाल उठता है कि जमीन का बंटवारा किस तरह से होता है ?

पहला काम है जमीन की जांच-पड़ताल होना कि कैसी है, खेती के लायक है या नहीं। इसके बाद सात-आठ दिन पहले से खबर कराके जिस गांव की जमीन होती है, उस गांव में या पड़ोस में एक बड़ी सभा होती है। उस सभा में पूछा जाता है कि बेजमीन-वाले लोग कौन-कौन हैं। अगर इनमें से कुछ ऐसे हुए जो कोई दूसरा धंधा करते हैं या नौकरी में हैं तो उन्हें जमीन नहीं मिलती। जो बाकी बचते हैं, उनके बारे में मालूम किया जाता है कि वे जमीन पाने के हकदार हैं या नहीं। इसके बाद जितनी जमीन मिली होती है, वह बांट ली जाती है। अगर जमीन कम हुई तो उसी समय तुरंत और जमीन मांग लेते हैं। मिल गई तब तो वह नईवाली और पुरानीवाली जमीन सब एक साथ मिलाकर बांट दी जाती है। अगर न मिली तो कागज में नाम लिखकर उसकी गोली बनाकर किसी बच्चे या बूढ़े से उठवा लेते हैं और फिर जो नाम आवें, उन्हें जमीन दे दी जाती है।

पांच आदमी के परिवार के लिए अक्सर एक एकड़ तरी या ढाई से पांच एकड़ तक खुश्क जमीन दी जाती है। इस तरह दान में मिली हुई जमीन इंसाफ और प्रेम के साथ बेजमीनवालों को मिल जाती है। बंटवारे में हरिजनों का विशेष ध्यान रखा जाता है।

जमीन पर खेती करने के लिए हल चाहिए, बैल चाहिए। सिंचाई के वास्ते कुंआ या पानी चाहिए। इसलिए विनोबा दान में खेती का सरंजाम भी लेते हैं। उनका कहना है कि हर शादी में अगर लड़के या लड़कीवाला दान-रूप में एक कुंआ बनवा दे तो देखते-देखते सिंचाई का सवाल हल हो जाय।

विनोबा की मांग है कि इस यज्ञ में हर कोई कुछ-न-कुछ चढ़ावा दे। जिसके पास जमीन न हो वह क्या दे? विनोबा कहते हैं कि वह अपनी संपत्ति या अपनी आमदनी का छठा हिस्सा उन्हें दे। इसीका नाम है संपत्ति-दान-यज्ञ। इसके बारे में विनोबा का कहना है :

१. संपत्ति हरएक को अपने पास रखनी है। चाहे तो बैंक में भी रख सकते हैं।
२. जो हिस्सा देना है, वह जीवनभर देना है।
३. संपत्ति का खर्च मेरे कहने के अनुसार हो।

जिसके पास न खेती हो, न संपत्ति, वह क्या करे ? वह अगर बहुत पढ़ा-लिखा है और बुद्धि की मेहनत से पैसा कमाता है तो विनोबा कहते हैं कि बुद्धि-दान करो। मिसाल के लिए वकील हो तो गरीबों के मुकदमे प्रेम से फैसला करा दे या अदालत में लड़ना पड़े तो कम फ़ीस ले या न ले। अगर विद्वान या प्रोफेसर हो तो विद्या-दान करे। गरीबों को मुफ्त पढ़ाये और सच्चे ज्ञान का प्रचार करे। अगर किताबें लिखता हो या अखबारनवीस हो तो भूदान-यज्ञ के विचार के प्रचार में और लोगों को सच्ची राह पर चलने में मदद दे। लेकिन अगर पढ़ा-लिखा नहीं है और बदन का हट्टा-कट्टा है तो विनोबा कहते हैं कि श्रम-दान करो। अपने हाथ-पैर की मेहनत से दूसरे का भला करो। अब तो उनके काम के लिए बहुत-से लोगों ने अपना सारा जीवन ही सौंप दिया है।

औरतों से विनोबा कहते हैं कि अंदर से सुंदर बनो और झूठी सुंदरता की शान, यानी जेवर छोड़ो। चांडिल में उन्होंने अलंकार-दान-यज्ञ भी शुरू कराया।

लेकिन जिसके पास आमदनी का कोई भी साधन न न हो, न जमीन, न शिक्षा और बदन का भी कमजोर हो या साधु-संन्यासी हो तो विनोबा उससे

कहते हैं कि इस देश के भले के लिए कामना करो।

इस तरह विनोबा ने देश में जो नया यज्ञ शुरू किया है, उसमें हर किसीको काम करने की और अपना चढ़ावा देने की गुंजाइश है।

: ५ :

भूदान का रहस्य

आजकल हम देखते हैं कि गांव-गांव में, घर-घर में बाहर का बना सामान पटा पड़ा है। कपड़ा-लत्ता, तेल-साबुन, चीनी, सिगरेट-बीड़ी, जूता-चप्पल अधिकांश चीजें मिल की बनी हैं या परदेश से आई हैं। गांव में न कोई खास धंधा होता है, न कोई पढ़ा-लिखा आदमी ही वहां ठहरता है। जरा पढ़ना आया कि हाथ से काम करने को जी नहीं चाहता और शहर में नौकरी खोजते हैं। इस तरह घर-घर में आलस बढ़ रहा है। खाली रहने के कारण चोरी, जुवारी, लड़ाई-झगड़े आदि बुरे काम फैल रहे हैं। अगर यह हालत कुछ दिन और जारी रही तो हमारी खेती आदि सब हाथ से चले जायंगे। दाने-दाने को हम मोहताज हो जायंगे।

इससे बचने का क्या रास्ता है? इस चक्कर में से कैसे निकला जाय? इसका एक ही उपाय है।

वह यह कि घर की चीज घर में और गांव की चीज गांव में ही बने। खाने, पहनने-ओढ़ने, घर बनाने आदि जैसी जरूरत की हर चीज गांव के अंदर तैयार हो। परदेश या शहरों से न आवे। हर चीज गांव के लोग ही बना लें। हर चीज गांव में होनेवाले कच्चे माल से तैयार हो। यह नहीं कि कपास बंबई या नागपुर से आवे तब उसको काता जाय और फिर कपड़ा बने। या जानवर की खाल कलकत्ता या कानपुर से आवे, तब उसको रंगा जाय और फिर जूता बने। कपास गांव में ही होनी चाहिए, खाल गांव के मुर्दा जानवरों की ही हो। इस तरह जरूरत का कच्चा माल गांव में हो—जैसे अनाज, तिलहन, कपास, ईख आदि। वहीं वह पक्का किया जाय और वहीं इस्तेमाल में आवे। यह बात अलग है कि नमक हर जगह नहीं होता तो बाहर से आ जायगा या पहाड़ी इलाकों में ईख नहीं हो सकती तो ईख या गुड़ वहां बाहर से आयगा।

लेकिन आजकल हालत यह हो रही है कि लालच में आकर कहीं हम ईख-ही-ईख बोते हैं या तम्बाकू बोते हैं या ढेर सारी मूंगफली पैदा करते हैं। मगर कौन किसको रोके ? अपनी जमीन पर हर कोई जो चाहे पैदा करता है। नतीजा यह होता है कि गांव-का-

गांव, सब-के-सब दुखी रहते हैं। इसलिए जरूरत इस बात की है कि हर गांव में पहले तो वे चीजें हों, जिनकी वहां के लोगों को दरकार है। फिर उसके अलावा कुछ चीजें और हों ताकि बाहर से लेन-देन चल सके। लेकिन यह हो तभी सकता है, जब गांव की कुल जमीन किसी एक आदमी की न रहकर गांव-भर की हो। पूरा गांव उसका मालिक हो और फिर सलाह-मशविरे से एक परिवार की तरह सब अपनी-अपनी खेती करें। सारा गांव एक कुनबा-जैसा हो। वहां की जमीन भगवान की। जो कोई उसपर मेहनत करे, वह खाये।

अगर सब लोग मेहनत करके खाते हैं तो हमारे गांव फिर हरे-भरे हो जायंगे। जरूरत का हर माल गांव में ही बनने लगेगा। हमारे ऊपर बाहर कोई ताकत जोर नहीं लगा सकेगी। अपना कोई माल-सामान हमारे मत्थे नहीं मढ़ सकेगा। गांव का कोई झगड़ा या सवाल होगा तो घर की तरह सब जने बैठ-कर उसको हल कर लेंगे। फिर हम जिसे अपने में सबसे ज्यादा ईमानदार और भला आदमी समझेंगे, उसे अपना मुखिया बनायंगे। उसको प्रदेश की असेंबली या नई दिल्ली की लोक-सभा में अपना प्रतिनिधि बना-

R.B.A.N.M'S H.S (M) LIBRARY

 42

कर भेजेंगे, ताकि वहांपर वह हमारी भलाई की बात करे। इस तरह अपने घर, गांव और देश की काया-पलट कर नई जिंदगी हासिल करेंगे। इसीको महात्मा गांधी 'राम-राज्य' कहते थे। इसीको विनोबा 'ग्राम-राज्य' कहते हैं। यही भूदान का रहस्य है।

विनोबा कहते हैं कि कुछ जमीन इकट्ठी कर लेने से ही भूदान-यज्ञ का उद्देश्य पूरा नहीं होता। असली काम तो आगे करने का है। पाई हुई जमीन बांटनी होगी। जिन्हें जमीन दी जायगी, उन्हें काम के लिए सामान दिलाना होगा। उनको जमीन पर जमाना होगा। जिन गांवों में जमीन मिलेगी उन गांवों में खाना, पानी, खादी, देहाती उद्योग-धंधे, नई तालीम आदि के द्वारा ग्राम-राज्य कायम करना होगा।

भूदान का उद्देश्य ग्राम-राज्य स्थापित करना है और यह काम प्रेम के साथ करना है। अपने-आप दुःख उठाकर करना है। दूसरों को जबरदस्ती नहीं, बल्कि समझा-बुझाकर अपनी बात पर राजी करना है।

महात्मा गांधी के कहने पर चलकर देश प्रेम के साथ स्वराज्य की मंजिल पर पहुंच गया। विनोबा के इस रास्ते पर चलकर देश प्रेम के साथ ग्राम-राज्य की मंजिल पर पहुंच जायगा।

R. B. A. N. M'S
High School (Main) Library
BOOK CARD
Author RAMBHAYE (SURESH).
Title Vinoba Aur Buddhan.
Accession No. 4345
Class No.

Name of the Borrower	Card No.	Due Date

समाज विकास - माला की पुस्तकें

१. बदरीनाथ
२. जंगल की सैर
३. भीष्म पितामह
४. दिवि और दधीचि
५. विनोबा और भूदान
६. कबीर के बोल
७. गांधीजी का विद्यार्थी-जीवन
८. गंगाजी
९. गौतम बुद्ध
१०. निषाद और शबरी
११. गांव सुखी, हम सुखी
१२. कितनी जमीन ?
१३. ऐसे थे सरदार
१४. चैतन्य महाप्रभु
१५. कहावतों की कहानियां
१६. सरल व्यायाम
१७. द्वारका
१८. बापू की बातें
१९. बाहुबली और नेमिनाथ
२०. तंदुरुस्ती हजार नियामत
२१. बीमारी कैसे दूर करें ?
२२. माटी की मूरत जागी
२३. गिरिधर की कुंडलियां
२४. रहीम के दोहे
२५. गीता-प्रवेशिका
२६. तुलसी - मानस - मोती
२७. दादू की वाणी
२८. नजीर की नज्में
२९. संत तुकाराम
३०. हजरत उमर
३१. बाजीप्रभु देशपांडे
३२. तिरुवल्लुवर
३३. कस्तूरबा गांधी
३४. शहर की खेती
३५. कावेरी
३६. तीर्थराज प्रयाग
३७. तेल की कहानी
३८. हम सुखी कैसे रहें ?
३९. गो-सेवा क्यों ?
४०. कैलास-मानसरोवर
४१. अच्छा किया या बुरा
४२. नरसी महेता
४३. पंढरपुर
४४. ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती
४५. संत ज्ञानेश्वर
४६. धरती की कहानी
४७. राजा भोज
४८. ईश्वर का मंदिर
४९. गांधीजी का संसार-प्रवेश
५०. ये थे नेताजी
५१. रामेश्वरम्
५२. कब्रों का विलाप
५३. रामकृष्ण परमहंस
५४. समर्थ रामदास
५५. मीरा के पद
५६. मिल-जुलकर काम करो
५७. कालापानी
५८. पावभर आटा
५९. सवेरे की रोशनी
६०. भगवान के प्यारे
६१. हारूं-अल-रशीद
६२. तीर्थंकर महावीर
६३. हमारे पड़ोसी
६४. आकाश की बातें
६५. सच्चा तीरथ
६६. हाजिर जवाबी
६७. सिंहासन-बत्तीसी भाग १
६८. सिंहासन-बत्तीसी भाग २
६९. नेहरूजी का विद्यार्थी - जीवन
७०. भूदानराज
७१. नाना फड़नवीस
७२. गुरु नानक

मूल्य प्रत्येक का छः आना

R.B.A.M.'s High School (Main) LIBRARY

सैंतीस नये पैसे